International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 4 Issue 4, July-August, 2016, Impact Factor: 1.554

uL; deZ dh egRork

Dr. Anil Kumar

MD (Panchkarma)

<u>नस्य–परिभाषा</u>

औषधम् औषध सिद्धं स्नेहो वा नासिकाभ्यां दीयते इति नस्यय। (सु- fp- 40@21½

औषधि अथवा औष/k fl} Lugk dk ukIkekxZ ls fn;k tkuk uL; dgykrk gSA

जो औषध– द्रव्य, सुक्ष्मचूर्ण अथवा द्रव के रूप में नासिका के रन्ध्रों में सुंघाया या टपकाया जाता gS mls uL; dgrs gSA

उर्ध्वजत्रुविकारेषु विशेषात्रस्यमिष्यते।

नासा ही शिरसो द्वारं तेन तद्व्याप्य हन्ति ताuA ¼v- â- l- 20@1½

नासा सिर का द्वार है इस द्वार से दी गयी औषध नासारन्ध्रों में प्रविष्ट होकर सम्पूर्ण शिर में व्याप्त हो जाती है तथा उर्ध्वजत्रुगत रोगों में विशेष रूप से लाभदायक होता है।

आयार्च चरकानुसार नस्य के प्रयोग से शिरःस्थ विकृत कफ–द्रव जब नासा ekxZ ls L=for gks tkrk है तो शिरोगौरव, शिरःशूल, (पीनस) दुष्ट प्रतिश्याय, अर्द्धावभेदक, अपस्मार, मूर्च्छा में सद्यः लाभ होता gSA

पर्याय– शिरोविरेचन, मूर्धविरेचन, नस्तः कर्म, शिरोविरेक, नावन, नस्य।

<u>iz;kstu ,oa egRo</u>

1- बहुयामी कार्यक्षमता– नस्यकर्म स्नेहन, शोधन, विरेचन, स्तम्भन, तर्पण, शमन, कर्षण, बृंहण, laKkiczck/ku vkfn dk;Z djrk gSA

2- ik.kogL=kojk/k dk nj djuk& uL; d }kjk vo:) dQ nfor gkdj ukLk}kj l बाहर निकल जाता है और जिससे अवराध दूर हो जाता है एवं शिर का रक्तसंवहन तेज gk tkrk g iko.koL=krkojk/k nj gk tkrk g

3- कफ मल आदि के निष्कासन में उपयोगी– uL; nu l ukLxr ldkp nj gk जाता है और श्वास नलिका के संकोच पर भी विस्फारक प्रभाव पडता है जिससे कफ निष्कासित होकर श्वासावराध दूर हो जाता है।

4- t=m/oxr jkxk e mi;kxh& t= d Åij gku वाला शिर के विकारों में नस्य की विशेष उपयोगिता है। नस्य सेवन से नेत्र, कर्ण, नासिका के रोग, बालों का झडना या सफेद हाना, पीनस, अर्द्धाविभेदक, मन्यास्तम्भ, शिरः शूल, अर्दित, हनुग्रह रोग नष्ट हो जाते है।

5- वातादि रोग शामक – uL;de vockgd] xhokLrEHk vkfn okr0;kf/k] dQt jkxk में लाभदायक है तथा बृंहण शमन या शौधन इन तीनों कार्यो को करने में सक्षम है।

6- bfUn;k dk cy inku dju e& uL; de l Loj fLuX/k] fLFkj vkj xEHkhj /ofu;Dr होता है ज्ञानेन्द्रियों की शक्ति बढती है मुखमण्डल प्रसत्र तथा वृद्धावLFkk nj l vkrh gA

uL;de d v;kX; jkx ,o jkxh

1- vth.kh	2- HkDrHkDr	3- xjfifMr	4- ihre|@bPNk
5- er	6- efPNr	7- नवप्रतिश्याय	8- ihrLug@bPNk
9- 0;ok;dykUr	10- uoTojh	11- ihrrk;@bPNk	12- 0;k;keDykUr
13- fofjDr	**14 शिरःस्नात**	15- o)	16- vuokfIr
17 शिरः स्नानेच्छु	18- cky	19- jDrL=kfor	20- Jekr
21- Ø)	22- dkIxLr	23- {k/kkr	24- xfHk.kh ¼vukrio½
25 oxkojkf/kr	26- श्वासग्रस्त	27- तृष्णार्त	**28- शस्त्र/दण्ड कालान्त**
29- शोक से पीडित	30- vdky	31 nnu	

uL; de ;kX; jkx ,o jkxh

शेषास्त्वर्हा : विशेषतस्तु शिरो दत मन्यास्तंभगलहनुग्रह पीनसगलशुंडिकाशालूक शुकतिकमरर वर्त्मरोग व्यंगोपजिह्वकार्धावभेदक ग्रीवा स्कंधांसास्य नासिक कर्णाक्षिमूर्धकपाल शिरोरोगार्दितापतंत्रकापतानक गलगंड दंतशूलहर्षचालाक्षिराज्यर्बुद स्वरभेद वाग्ग्रह xnxn ØFkuknp Å/o t=xrkP{kA

¼p- fl- 2@22½

1- शिरो रोग 2- nr jkx 3- xyxg

4- eU;kLrEHk 5- gu xg 6- ihu l

7- गलशुण्डिका 8- गलशालूक 9- शुक्र

10- frfej 11- oRe jkx 12- अंसशुल

13- mift f0gdk 14 v/kkoHknd

15- xhok] d?kk] अंस, मुख, नासिका, कान, नेत्र और शिरः कपाल के रोग

16 vfnr 17- vir=d 18- viukrd

19- xyx.M 20- दन्तशूल/हर्ष/चल21- vf{k e jkft mRi= gkuk

22- xnxn okD; 23- Loj Hkn 24- okXxg

25- vcn 26- dFku 27 m/o t= d okr jkx

28 शिरः स्तम्भ 29 xhokjkx 30 e[kjkx

31- कर्णशूल 32- 0;x 33- नासाशूल

34- LdU/kjkx 35 दन्तस्तम्भ शुल